डिप्लोमा इन एजुकेशन (डी.एड.)

(शिक्षा में पत्रोपाधि)

विषय – भाषा शिक्षण

प्रथम वर्ष

प्रकाशन वर्ष 2010

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
शंकरनगर, रायपुर, छ.ग.

प्रकाशन वर्ष 2010

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ़

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

सुधीर कुमार अग्रवाल

संचालक राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ़

तकनीकी सहयोग एवं सामग्री संकलन

विद्या भवन सोसाइटी उदयपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर, आईत्रसी.आई.सी. फाउण्डेशन,पुणे

समन्वय

आर.के. वर्मा, सहायक प्राध्यापक

एवं

डेकेश्वर वर्मा, प्रधानाध्यापक

विशेष सहयोग

श्री यू.के. चक्रवर्ती, सहायक प्राध्यापक

विषय संयोजक

बी.आर.साहू , प्रधानाध्यापक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर उन सभी लेखकों/प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनकी रचनाएं आलेख इस पुस्तक में समाहित है।

प्रकाशक – **छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम रायपुर**

प्राक्कथन

विद्यालय में अध्ययनरत् बच्चे भविष्य में राष्ट्र के स्वरूप व दिशा निर्धारण करेंगे। शिशुकरण बच्चों को कुम्हार की भाँति गढ़ता है और वांछित स्वरूप प्रदान करता है इस गुरूतर दायितव के निर्वहन के लिए शिक्षकों को बेहतर तरीके से तैयार करना होगा।

''शिक्षा बिना बोझ के'' यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) ने माना है कि शिक्षकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल में अध्ययन अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इन कार्यक्रमों की विषयवस्तु इस प्रकार पुननिर्धारित की जानी चाहिए कि स्कूली शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता बनी रहें। इन कार्यक्रमों में प्रशिशुओं में स्वशिक्षक और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता के विकास पर जोर होना चाहिए।

कोठारी आयोग (64.66) से ही यह बात की जाने लगी थी कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करें, उनके लिए उपयुकत सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करें, बच्चे की जिज्ञासा को बनाए रखे, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करें व उनके अनुभवों का सम्मान करें।

तात्पर्य यह कि आज की जटिल परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका कही अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व महत्वपूर्ण हो गई है। इसी परिपेक्ष्य में सेवापूर्ण प्रशिक्षण को और कारगर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा में आमूल चूल बदलाव की आवश्यकता बताते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में शिक्षकों की भूमिका के संबंध में कहा गया है कि सीखने सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बने जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समथ्र बनाएं।

प्रश्न यह है कि शिक्षक को तैयार कैसे किया जाए। बेहतर होगा कि विद्यालय में प्रवेश के पूर्व ही उसकी बेहतर तैयारी हो, उसे विद्यालय के अनुभव दिए जाए। सेवापूर्व प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम व विषयवस्तु को फिर से देखने की जरूरत है। इसी परिपेक्ष्य में डी.एड. के पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

पाठ्यसामग्री का फोकस शिक्षक विधि से हटकर शिक्षा की समझ, विषयों की समझ, बच्चों के सीखने के तरीके की समझ, समाज व शिक्षा का संबंध जैसे पहुलओं पर केन्द्रित है। पाठयक्रम में शिक्षण के तरीकों पर जोर देने के स्थान पर विषय की समझ को महत्व दिया गया है। शिक्षा के दार्शनिक पहलू को समझने, पाठ्यचर्या के आधारों को पहचानने और बच्चों की पृष्ठभूमि में

विविधता व उनके सीखने के तरीकों को समझने की शुरुआत की गई हो। प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में इन छः विषयों को सम्मिलित किया गया है–

1. ज्ञान, शिक्षाक्रम व शिक्षण शास्त्र
2. बाल विकास और सीखना
3. शाला व समुदाय
4. कला शिक्षा
5. गणित व गणित शिक्षण
6. भाषा व भाषा शिक्षण

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखक/प्रकाशकों की पाठ्य सामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखकर ज्यों की त्यों ली गई है कहीं कहीं स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से लेकर अनुदित की गई है। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सकें। इग्नू और एन.सी.इ.आर.टी. सहित जिन भी लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी है। हम विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, दिगंतर जयपुर, एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बेंगलोर, आई.सी.आई.सी. फाउण्डेशन पुणे, आई.आई.टी. कानपुर, छ.ग. शिक्षा संदर्भ रायपुर के अभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट के सदस्य संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन–सामग्री को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

अंत में पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बंधुओं का हम पुनः आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम तैयार करने व पाठ्य सामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्यपुस्तक को यह स्वरूप दिया जा सका। पुस्तक के संबंध में शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ–साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सकें।

धन्यवाद!

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद रायपुर, छत्तीसगढ़

— अनुक्रमणिका —

सबक	अध्याय	पेज न.
सबक–I	**भाषा किस चिड़िया का नाम है**	**01-24**
•	बच्चों की भाषा	02-09
•	अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना	10-12
•	रेमण्ड स्कुपिन 2005 भाषा का मानव विज्ञान विश्व स्तरीय परिप्रेक्ष्य प्रिन्टिस हॉल	13-24
सबक–II	**भाषा का दूसरा कदम–स्कूल**	**25-50**
•	बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता	26-29
•	बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता	30-34
•	भाषा सिखाना माने क्या	35-39
•	भाषा व भाषा शिक्षण	40-42
•	बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं : कुदरती जादू या लंबा, लंबा सफर?	43-50
सबक–III	**समाज का ताना बाना और भाषा**	**51-71**
•	बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा–शिक्षण एवं बौद्धिक विकास	52-55
•	भारतीय भाषाएँ : विकासशील समाज में पहचान का माध्यम	56-59
•	भाषा और तौर तरीके	60-61
•	भाषा और पहचान – डेविड क्रिस्टल	62-65
•	कौन भाषा, कौन बोली	66-70
सबक–IV	**बातें, पढ़ना, निजी संसार गढ़ना**	**71-90**
•	बातें करना	72-84
•	पढ़ना यानि एक सृजनात्मक अनुभव	85-86
•	सही मायनों में आखिर 'पढ़ना' है क्या?	87-90
सबक–V	**पढ़वाना किस चिड़िया का नाम है?**	**91-126**
•	बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते?	92-96
•	पढ़ना कैसे सिखाया जाय?	97-109
•	पढ़ने का आकलन कैसे करें	110-116
•	पढ़ाई पहली कक्षा की	117-119
•	पढ़ना सिखाना	120-126
सबक–VI	**अब, लिखना किस चिड़िया का नाम है?**	**127-170**
•	लिखना – क्या और कैसे?	128-137
•	लिखना सिखाने के उभरते आयाम	138-146
•	लेखन के विविध प्रकार	147-161
•	लिखना–बातचीत	162-170
सबक–VII	**इम्तहान / आकलन**	**171-199**
•	आकलन (NCERT Handbook)	172-186
•	मूल्यांकन (एन.सी.एफ.)	187-194
•	मूल्यांकन क्यों?	195-199